E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(2): 125-126
Received: 12-08-2019
Accepted: 22-09-2019

डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

समाज में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

डॉ. संध्या गौतम

प्रस्तावना

जनसंचार माध्यमों की आधुनिक समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जिन साधनों का प्रयोग कर बहुत से मानव समूहों तक, विचारों, भावनाओं व सूचनाओं को सम्प्रेषित किया जाता है, उन्हें हम जनसंचार माध्यम या मीड़िया कहते हैं। मीडिया अर्थात् जनसंचार माध्यम को तीन वर्गो में विभाजित किया जा सकता है – मुद्रण माध्यम, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम एवं नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम। मुद्रण माध्यम के अन्तर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पैम्फलेट, पोस्टर, जनरल आदि; इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अन्तर्गत रेडियो, टेलीविजन एवं सिनेमा तथा नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अन्तर्गत इन्टरनेट आदि आते है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में सूचनाएं इतनी तीव्रता से जन–जन तक पहुंचती है; जिससे मीडिया का महत्त्व भी तीव्र गति से सतत बढ़ रहा है।

मीडिया ने आज समग्र विश्व को एक 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित कर दिया है। लोकतंत्र का सजग प्रहरी होने के कारण ही इसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। वास्तव में मीडिया का प्रमुख कार्य लोकमत का निर्माण, सूचनाओं का प्रसार, भ्रष्टाचार; सफेदपोशों के काले कारनामों का पर्दाफाश, लोक जागरण, अंधविश्वासों पर प्रहार आदि है। मीडिया ही विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका पर निगरानी रखकर लोकतान्त्रिक भावनाओं की रक्षा करता है। समय–समय पर जेसिका लाल हत्या कांड, रुचिका कांड, निर्भया कांड, डाक टिकट घोटाला, 2–जी स्पेक्ट्रम घोटाला, चारा घोटाला, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, कोयला घोटाला, मैच फिक्सिंग आदि को उजागर कर मीडिया ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

भारत में जनसंचार की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है। भारतीय पौराणिक साहित्य में इसके उदाहरण मिलते है – महाभारत में संजय धृतराष्ट्र को युद्ध का (लाइव टेलीकास्ट) आंखों देखा हाल युद्ध भूमि से कोसों दूर बैठे हुए भी सुनाते है; जिसे हम सभी दिव्य दृष्टि का नाम देते हैं। ऐसी घटनाएँ प्राचीन भारत में आधुनिक संचार माध्यमों की तरह सूचना संचार तंत्र की उपस्थिति का संकेत देती है। परम्परागत रूप से भारत में समूह संचार ही अपनाया जाता रहा है, जिसमें मेले, सभा, तीर्थाटन आदि के माध्यम से अखिल भारत में संचार सम्भव था। लोकनाट्य भी जन संचार का लोकप्रिय माध्यम रहा। आधुनिक काल में पत्रकारिता के साथ–साथ जनसंचार रेडियों, टेलीविजन से होता हुआ इन्टरनेट तक आ पहुँचा। इन द्रुतगामी संचार साधनों ने समग्र विश्व को गाँव में परिवर्तित कर दिया।

पत्रकारिता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था – ''पत्रकारिता का उद्देश्य जनता की इच्छाओं तथा विचारों को समझना और व्यक्त करना, जनता में वांछनीय भावनाओं को जगाना तथा सार्वजनिक बुराइयों को निडरता से व्यक्त करना है।'' पत्रकारिता को जनता का आँख और कान माना जाता है, क्योंकि यह समाज–सुधार, राष्ट्रीय चेतना, मानव कल्याण कार्यों के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान की जानकारी भी जन सामान्य तक पहुंचाती है। इंद्र विद्यावाचस्पति ने तो पत्रकारिता को पंचम वेद माना है। समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि सरकार और जनता के बीच सेतु का कार्य करते है। उनके माध्यम से सरकार अपने आदेश, परामर्श और नीतियां जनता तक पहुंचाती है और जनता अपनी पीड़ा, आक्रोश और इच्छा सरकार तक। वास्तव में लोकतंत्र की रक्षा इन्हीं माध्यम से होती है।

भारत में रेडियों के प्रसारण का प्रारम्भिक प्रयास जून 1923 में शुरू हुआ। मुम्बई के बाद सन् जुलाई 1927 को कलकता से प्रसारण शुरू हुआ। इसी के साथ द्रुतगामी इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों की शुरूआत हुई, जो दूरदर्शन से होती हुई आज इन्टरनेट सेवाओं तक आ पहुंची। आज मोबाईल के माध्यम से विश्व का बच्चा–बच्चा विश्व की हर गतिविधि की सूचना क्षणों में प्राप्त कर लेता है। यही कारण है कि इन माध्यमों ने सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव में तबदील कर दिया है।

भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन के समय पत्र–पत्रिकाओं, रेड़ियों आदि ने अपनी अहम् भूमिका अदा की साहित्यकारों और समाज–सुधारकों ने अपने निजी प्रयासों से पत्र–पत्रिकाओं द्वारा जन–जागरण, क्रान्तिकारियों को संगठित कर उनमें ऊर्जा प्रवाहित करने का कार्य किया।

अन्ना–आन्दोलन, किसान आन्दोलन आदि पर पत्र–पत्रिकाओं के साथ साथ नव इलेक्ट्रोनिक जन संचार माध्यमों ने अपनी अहम् भूमिका अदा की। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी श्री गणेश शंकर जैसे पत्रकार हुए, जो स्वयं तो शहीद हो गए, परन्तु जनमानस में साम्प्रदायिक एकता, प्रेम, भाईचारा और राष्ट्रीयता की भावनाएं बड़ी तीव्रता के साथ जगा गये। ऐसे पत्रकार और संवाददाता ही मानवीय संवेदनाओं और राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत कर अमर हो जाते हैं। वे समय की नब्ज को पहचान कर जनता और सरकार सभी को उचित अनुचित का ज्ञान करवाते रहते हैं। एक समय था जब यह कहा जाता था कि 'ज्ञान ही शक्ति है', लेकिन आज कहा जा रहा है – 'सूचना ही शक्ति है;' जिसके पास अधिकतम और नवीनतम सूचना नहीं, वह पिछड़ा तथा कमजोर माना जाता है। वास्तव में ज्ञान के अन्तर्गत सूचना, विचार, अवधारणा, मूल्य, सामाजिक प्रतीक, व्यवहार सब कुछ आ सकता है। ज्ञान जीवन की प्रगति का आधार है और सूचना ज्ञान का आधार होती है। दोनों मिलकर ही मनुष्य और समाज की गति–प्रगति को निर्धारित करते है और संचार इन दोनों को प्रभावपूर्ण बनाता है।

जब प्रिंट मीडिया में वाजपेयी सरकार द्वारा विदेशी निवेश की अनुमति दी गई, तब अन्य सभी राजनैतिक दलों ने इसका विरोध किया। इस विदेशी निवेश नीति के आलोचकों का मानना था कि यह नीति हमारे राजनीतिक, बौद्धिक व सांस्कृतिक ढाँचे को विकृत कर देगी; इसलिए यह निर्णय लोकतंत्र का दुश्मन है। कांग्रेस सरकार के लिए इस मुद्दे की खिलाफत करना शायद एक भावात्मक मामला था; क्योंकि सन् 1955 में पं. जवाहर लाल नेहरू ने भारत के प्रिंट मीडिया में विदेशी निवेश को अनुमति नहीं दी थी। आज उन्मुक्त इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के युग में विदेशी निवेश को अनुमति देकर सरकार ने कोई अनुचित कार्य नहीं किया। विदेशी निवेश से उपभोक्ताओं को गुणवतायुक्त ज्ञानवर्धक अच्छे समाचार पत्र प्राप्त होंगे। पत्रकारों को कम मेहनत पर अच्छी आय प्राप्त होगी। वास्तव में मीडिया की स्वतंत्रता अनुच्छेद 19(1) क में दी गई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में शामिल है। इसके अनुसार सरकार निम्नलिखित मामलों पर प्रतिबंध लगा सकती है, जैसे – मान–हानि, न्यायलय की अवमानना, शिष्टाचार, सदाचार, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध, अपराध–उद्दीपन, लोक–व्यवस्था, देश की संप्रभुता और अखंडता आदि।

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि पत्रकारिता को केवल किसी की आलोचना और प्रशंसा का साधन बना कर सफलता का प्रयास करना तो बुद्धि के ऐरावत हाथी पर नगरपालिका का कूडा ढोने के बराबर है। आज मीडिया में सनसनी फैलाने वाले समाचारों की मात्रा बढती जा रही है। पीत पत्रकारिता राष्ट्र की नाड़ियों में विष का संचार करती है, जिसका असर धीरे–धीरे सामने आता है। वह राष्ट्र के जीवन तत्त्वों को अस्वस्थ बना नष्ट कर डालती है। पैसा, विज्ञापन, स्वार्थ की अंधी दौड़ ने सभी नैतिक मूल्यों को ताक पर रख दिया है। ऐसी पत्रकारिता को जड़–मूल से समाप्त करना जरूरी है। मीडिया से जुड़े लोगों के लिए आवश्यक है कि उनके मन–मस्तिष्क स्वस्थ, सुरुचिपूर्ण और सहज मानवीय संवेदनाओं से जुड़े हो।

आज हम सब सूचना क्रान्ति के युग में रह रहे हैं कोई भी क्रान्ति समाज निरपेक्ष नहीं हुआ करती, वह समाज सापेक्ष ही होती है। उसके सामाजिक सरोकार हुआ करते है। वह समाज में सामाजिक परिवर्तन की वाहक होती है। सच तो यह है कि वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी विकास करते–करते संचार माध्यम के रूप में एक चुनौती बनकर खडी है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रतिनिधि जनसंचार माध्यम अर्थ केन्द्रित हो गए है। इस क्षेत्र में पैसे की सोच ने हमें विभिन्न स्तरों पर मूल्यहीन कर दिया है एक तो व्यक्तिगत स्तर पर हमारी बौद्धिक क्षमता मनोविज्ञान, चिन्तन, दृष्टिकोण आदि के रूप में, दूसरे सामाजिक स्तर पर, सांस्कृतिक अवूल्यन, नैतिक मूल्यों का ह्रास, भ्रष्टाचार आदि के रूप में हम अपने राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को समझ सकते है। सर्वत्र अपसंस्कृति के फैलाव ने हमें चिन्ताजनक स्थिति में ला खड़ा किया है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध समाज शास्त्री श्यामचरण दूबे का कथन ध्यान देने योग्य है कि –

''सूचना के इस बौद्धिक तंत्र ने भारत जैसे उपमहाद्वीप में 'संक्रमण' और विस्फोट की स्थिति पैदा कर दी है तथा जनसंचार के साधन आकाश से अपसंस्कृति की वर्षा कर रहे है, जिससे एक आत्मकेन्द्रित और भोगवादी जीवन–दृष्टि विकसित हो रही है। इसके कारण सामाजिक लक्ष्य और विकास के राष्ट्रीय संकल्प डगगाने लगे है।'' उदाहरणस्वरूप हिंसा के प्रति आज हमारा दृष्टिकोण क्या है? पहल जब जनसंचार के माध्यम इतने विकसित नहीं थे, तब ऐसे समाचारों को पढ़कर हम चौक जाते थे। आज हम ऐसे समाचारों के आदी हो गए, जिससे हम निरन्तर अमानवीय होते चले जा रहे है, हमारा विवेक और बोध कुंठित होता जा रहा है जो मानव समाज के लिए घातक है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मानव समाज के विकास हेतु जन संचार माध्यमों का इस्तेमाल उचित उद्देश्य के लिए हो। उनकी व्यवस्था वैज्ञानिक ढंग से हो तथा नियंत्रण सही हाथों में हो। लोक हित को ध्यान में रखकर ही इन साधनों का प्रयोग हो। इसका प्रयोग करने वालों को अपने लिए एक आचार संहिता बनानी होगी, तभी ये साधन लोकतंत्र का कल्याण कर सकेंगे।

संदर्भ

1. जैन जोगेश चंद्र, निबंधमाला, अरिहंत पब्लिकेशन नई दिल्ली।
2. सिंह गुरमीत, हिंदी बदलता परिवेश, मेधा बुक्स नवीन शाहदरा दिल्ली।
3. वर्मा मानसिंह, अभिनव हिंदी निबंध, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।
4. बाबरा ब्रह्मर्षि विश्वात्मा दिव्या लोक प्रकाशन।